AH-II/AHSNS/203GE-2/18

B.A. Semester-II (Honours) Examination, 2018

SANSKRIT

Subject Code : 20903 **Course Code : AHSNS/203/GE-2**

Course Title : Poetry & Chanda

Time: 2 Hours **Full Marks: 40**

The figures in the margin indicate full marks.
Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.

বিভাগ : ক
বিভাগ ঃ ক

1. যথেচ্ছম্ *একস্য* সপ্রসঙ্গব্যাখ্যা সংস্কৃতেন দেবনাগরলিপ্যা চ লেখ্যা। 5×1=5
প্রসঙ্গ উল্লেখপূর্বক সরলসংস্কৃতে ও দেবনাগরী লিপিতে যে কোনো একটির ব্যাখ্যা করো।

(ক) মন্দ: কবি যশ: প্রার্থী গমিষ্যাম্যুপহাস্যতাম্।
প্রাংশুলভ্যে ফলে লোভাদুদ্বাহুরিব বামন:।।

(খ) জ্ঞানে মৌনং ক্ষমা শক্তৌ ত্যাগে শ্লাঘাবিপর্যয:।
গুণা গুণানুবন্ধিত্বাত্ তস্য সপ্রসবা ইব।।

2. যথেচ্ছম্ *একস্য* সংস্কৃতেন দেবনাগরলিপ্যা চ ভাবসম্প্রসারণং কার্যম্। 5×1=5
সরলসংস্কৃতে ও দেবনাগরী লিপিতে যে কোনো একটির ভাবসম্প্রসারণ করো।

(ক) হেম্ন: সংলক্ষ্যতে হ্যগ্নৌ বিশুদ্ধি: শ্যামিকাপিবা

(খ) সহস্রগুণমুত্স্রষ্টুমাদত্তে হি রসং রবি:।

3. যথেচ্ছম্ এক: প্রশ্ন: সমাধেয:। 10×1=10
যে কোনো একটি প্রশ্নের উত্তর দাও।

(ক) 'রঘুবংশম্' ইতি মহাকাব্যস্য প্রথমসর্গমনুসৃত্য দিলীপস্য চরিত্র বিশ্লেষণং ক্রিয়তাম্।
'রঘুবংশম্' মহাকাব্যের প্রথমসর্গ অনুসরণে দিলীপের চরিত্রবিশ্লেষণ করো।

(খ) 'তৌ দম্পতো বশিষ্ঠস্য গুরোর্জগ্মতুরাশ্রমম্'– কৌ তৌ দম্পতী? তয়ো: যাত্রামার্গস্য বিবরণং প্রদীয়তাম্।
'তৌ দম্পতো বশিষ্ঠস্য গুরোর্জগ্মতুরাশ্রমম্'— এখানে 'তৌ দম্পতী' বলতে কাদের বোঝানো হয়েছে। দম্পতীর যাত্রা পথের বিবরণ দাও।

(গ) পাঠ্যাংশম্ অবলম্ব্য 'উপমা কালিদাসস্য'– ইতি ব্যাখ্যায়তাম্।
পাঠ্যাংশ অবলম্বনে 'উপমা কালিদাসস্য' — এটি ব্যাখ্যা করো।

विभाग : ख

বিভাগ ঃ খ

4. अधोनिर्दिष्टेषु *द्वयो*: छन्दसो: सोदाहरणं लक्षण– व्याख्या करणीया: 5×2=10

যে কোনো দুটি ছন্দের উদাহরণ সহ ব্যাখ্যা করো ঃ

(क) मन्दाक्रान्ता।

(খ) মালিনী।

(ग) স্রগ্ধরা।

5. अधोनिर्दिष्टेषु प्रश्नेषु क-विभागत: न्यूनतया *एकं*, ख-विभागतश्च न्यूनतया *द्वयं* गृहीत्वा साकल्येन *पञ्च*प्रश्ना: समाधेया:।

নিম্নলিখিত প্রশ্নগুলির মধ্যে ক-বিভাগ থেকে কমপক্ষে *একটি* এবং খ-বিভাগ থেকে কমপক্ষে *দুটি* নিয়ে মোট *পাঁচটি* প্রশ্নের উত্তর দাও। 2×5=10

विभाग : क

বিভাগ ঃ ক

(क) राज्ञ: दिलीपस्य आकृति: कोदृशो आसीत्?
রাজা দিলীপের আকৃতি কেমন ছিল?

(খ) सोऽर्थमसक्त: सुखमन्वभूत्—क: कथं सुखम् अनुभूतवान्?
সোऽর্থমসক্ত: সুখমন্বভূত্— কে কীভাবে সুখভোগ করেছেন?

(ग) 'जगत: पितरौ वन्दे'– इत्यत्र 'पितरौ' इति पदेन कौ बोध्यते?
'জগত: পিতরৌ বন্দে' — এখানে পিতরৌ এই পদের দ্বারা কাদের বোঝানো হয়েছে?

विभाग : ख

বিভাগ ঃ খ

(घ) किं नाम समवृत्तम्?
সমবৃত্ত কাকে বলে?

(ঙ) कति गणा:? के च ते?
গণ কয়টি? সেগুলি কী কী?

(च) 'अर्थो हि कन्या परकीय एव'– इत्यस्य छन्दो निर्णय: क्रियताम्।
'অর্থো হি কন্যা পরকীয় এব' — এর ছন্দ নির্ণয় করো।

(छ) यतेर्लक्षणं लिख्यताम्।
যতির লক্ষণটি লেখো।

———————

AH-II/APSNS/201C-1B/18

B.A. Semester-II (Programme) Examination, 2018

SANSKRIT

Subject Code : 20904 **Course Code : APSNS/201C-1B**

Course Title : Sanskrit Poetry & Metre

Time: 2 Hours **Full Marks: 40**

The figures in the margin indicate full marks.
Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.

विभाग-क

1. अधस्तात् कस्यचिदेकस्य प्रश्नस्य उत्तरं समाधेयम् : 10×1=10

(क) रघुवंशीयनृपाणां यावन्तो गुणा वर्णिताः कविना इत्येतत्सर्वं रघुवंशकाव्यस्य प्रथमसर्गानुसारं प्रतिपादनीयम्। 10

রঘুবংশীয় রাজাদের যতগুলি গুণ কবি বর্ণনা করেছেন সেই সবগুলি রঘুবংশ মহাকাব্যের প্রথম সর্গ অনুসারে বর্ণনা করো।

(ख) रघुवंश महाकाव्यस्य प्रथमसर्गस्य विषयवस्तु संक्षिप्य लिखत। रघुवंश महाकाव्यस्य प्रारम्भे मङ्गलसूचकः कः श्लोकः अस्ति? 8+2=10

রঘুবংশ মহাকাব্যের প্রথমসর্গের বিষয়বস্তু সংক্ষেপে লেখো। রঘুবংশ মহাকাব্যের প্রারম্ভে মঙ্গলসূচক কোন শ্লোকটি আছে?

(ग) दिलीपसुदक्षिणयोः वशिष्ठाश्रमगमने को हेतुः? तयोरनपत्यतायाः कि कारणम्? केनोपायेन तत्कारणं निवारितम्। 2+4+4=10

দিলীপ ও সুদক্ষিণার বশিষ্ঠাক্রমে আগমনের কারণ কী? তাঁদের নিঃসন্তান হওয়ার কারণ কী? কীভাবে তা নিবারিত হয়েছিল?

2. श्लोक*स्यैकस्य* सप्रसङ्ग संस्कृतभाषया देवनागरलिप्या च व्याख्या करणीया : 5×1=5

একটি শ্লোকের সংস্কৃত ভাষায় দেবনাগরী লিপিতে সপ্রসঙ্গ ব্যাখ্যা করো ঃ

(क) शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।
वार्द्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्।।

(ख) व्यूढोरस्को वृषस्कन्दः शालप्रांशुर्महाभुजः।
आत्मकर्मक्षमं देहं क्षात्रो धर्म इवाश्रितः।।

3. अधोलिखितद्वयमध्ये कस्य*चिदेकस्य* भावार्थो लेखनीय :। 5×1=5

অধোলিখিত দুটির মধ্যে কোনো *একটির* ভাবার্থ লেখো ঃ

(क) सन्तिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे।

(ख) फलानुमेयाः प्रारम्भाः संस्काराः प्राक्तना इव।

विभाग-ख

4. यथेच्छं द्वयोः छन्दसोः सोदाहरणं लक्षणव्याख्या करणीया। 5×2=10
যথেচ্ছ দুটি ছন্দের সোদাহরণ লক্ষণ ব্যাখ্যা করো।
तोटकम्, उपेन्द्रबज्रा, वसन्ततिलकम्

5. अधोनिर्दिष्टेषु प्रश्नेषु क-विभागतः न्यूनतया *एकं*, ख-विभागतश्च-न्यूनतया *द्वयं* गृहीता साकल्येन *पञ्च* प्रश्नाः समाधेयाः। 2×5=10
নিম্নলিখিত প্রশ্নগুলির মধ্যে **ক-বিভাগ** থেকে কমপক্ষে *১টি* এবং **খ-বিভাগ** থেকে কমপক্ষে *২টি* নিয়ে মোট *৫টি* প্রশ্নের উত্তর দাও।

विभाग-क

(क) 'रघुवंशम्' इति काव्यं केन विरचितम्? काव्येऽस्मिन् कति सर्गाः सन्ति?
'রঘুবংশম্' কাব্যের রচয়িতা কে? উক্ত কাব্যে কয়টি সর্গ আছে?

(ख) कः रघुवंशस्य कुलगुरुः आसीत्? किमर्थं महाराजः दिलीपः कुलगुरोः आश्रमम् अगच्छत्?
'রঘুবংশের কুলগুরু কে ছিলেন? কেন মহারাজা দিলীপ কুলগুরুর আশ্রমে গিয়েছিলেন?

(ग) 'स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः'– 'सः' इति पदेन कः अवबोध्यते? 'पितरस्तासाम्' इति पदस्य सन्धिविच्छेदः क्रियताम्।
'স পিতা পিতরস্তাসাং কেবলং জন্মহেতবঃ'— 'সঃ'-এই পদের দ্বারা কাকে নির্দেশ করা হয়েছে? 'পিতরস্তাসাম্'— এই পদটির সন্ধিবিচ্ছেদ করো।

विभाग-ख

(क) का नाम जातिः?
জাতি কাকে বলে?

(ख) छन्दोग्रन्थदिशा कुत्र कुत्र गुरुस्वरः लघुस्वरश्च भवतः।
ছন্দগ্রন্থ অনুসারে কোথায় কোথায় গুরুস্বর হবে এবং কোথায় কোথায় লঘুস্বর হবে?

(ग) किं पद्यम्? तच्च कतिविधम्?
পদ্য কাকে বলে? পদ্য ক'রকম?

(घ) 'त्रिमुनियतियुता' इति पदस्य कः तात्पर्यार्थः?
'ত্রিমুনিযতিযুতা'— এই পদটির তাৎপর্যার্থ কী?

———————

BA-II/ACSHP-204AECC-2/18

B.A. Semester-II (Programme) Examination, 2018

SANSKRIT

Subject Code : 20905 **Course Code : ACSHP/204/AECC-2**

Course Title : MIL

Full Marks: 40

TEST BOOKLET SERIES

A

The figures in the margin indicate full marks.
Candidates should answer all questions.
Each question carries one mark.

1. भर्तृहरिमते कं न आराधयेत्?
(A) ईश्वरम्
(B) मातापितरौ
(C) सर्वज्ञम्
(D) मूर्खजनचित्तम्

2. समाजे अपण्डितानां विभूषणं किम्?
(A) अर्थः
(B) पाण्डित्यम्
(C) मौनम्
(D) वाग्मिता

3. साहित्यसङ्गीतकलाबिहीनः मनुष्य केन तुल्यः?
(A) विहगेन
(B) सर्पेण
(C) पशुना
(D) मत्स्येन

4. दुग्धजलभेदविधौ प्रसिद्धः कः?
(A) सर्पः
(B) मार्जारः
(C) हंसः
(D) कुक्कुरः

5. कस्य शास्त्रविहितम् औषधं नास्ति
(A) पीडितस्य
(B) उन्मत्तस्य
(C) मूर्खस्य
(D) दुर्बलस्य

6. लभेत सिकतासु नैलम् अपि यत्नतः पीडयन्-श्लोकांशस्य अन्वयः
(A) यत्नतः पीडयन् सिकतासु तैलम् अपि लभेत।
(B) सिकतासु तैलम् अपि लभेत यत्नतः पीडयन्।
(C) लभेत यत्नतः पीडयन् सिकतासु तैलम् अपि।
(D) तैलम् अपि लभेत सिकतासु यत्नतः पीडयन्।

7. नमः शान्ताय तेजसे —रेखाङ्कितपदे चतुर्थी किमर्थम्?
(A) सम्प्रदान कारके चतुर्थी
(B) नमः शब्दयोगे चतुर्थी
(C) कर्मकारके चतुर्थी
(D) तादर्थ्ये चतुर्थी

8. 'धिक् तां च तं च' रेखाङ्कितपदे द्वितीया कथम्?
(A) धिक्-शब्दयोगे
(B) कर्मणि
(C) चः शब्दयोगे
(D) कर्तरि

9. 'स्वायत्तमेकान्तगुणं विधात्रा विनिर्मितम्—रेखाङ्कित पदे तृतीया

(A) उक्तकर्तरि

(B) करणे

(C) अनुक्तकर्तरि

(D) हेतौ

10. सर्वाशापरिपूरके जलधरे वर्षति अपि प्रत्यहम्—रेखाङ्कित पदे सप्तमी—

(A) अधिकरणे सप्तमी

(B) भावे

(C) निमित्तार्थे

(D) अनादरे

11. प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचै:—रेखाङ्कितपदे क: समास:?

(A) अव्ययीभाव:

(B) बहुव्रीहि:

(C) तत्पुरुष:

(D) द्वन्द्व:

12. त्रिभुवनम् उपकारश्रेणिभि: प्रीणयन्त:—रेखाङ्कितपदस्य विग्रह:

(A) त्रीणि भुवनानि

(B) त्रिभुवनम्

(C) त्रयाणां मुवनानां समाहार:

(D) त्रयो भुवना:

13. सुरपतिम् अपि श्वा पार्श्वस्थं विलोक्य न शङ्कते—रेखाङ्कित पदे समास:

(A) तृतीयातत्पुरुष:

(B) पञ्चमीतत्पुरुष:

(C) षष्ठीतत्पुरुष:

(D) सप्तमीतत्पुरुष:

14. बुधजनसकाशाद् अवगतम्—रेखाङ्कितपदस्य व्युत्पत्ति: का?

(A) अव-$\sqrt{\text{गम्}}$ + क्त

(B) अव-$\sqrt{\text{गम्}}$ + न

(C) अव-$\sqrt{\text{गै}}$ + क्त

(D) $\sqrt{\text{अवगम्}}$ + क्त

15. प्रकृति इयं सत्त्ववतां न खलु वयस्तेजसो हेतु:—रेखाङ्कित पदस्य का व्युत्पत्ति:?

(A) प्र$\sqrt{\text{कृ}}$ + ति

(B) प्र $\sqrt{\text{कृ}}$ + क्तिन्

(C) प्र$\sqrt{\text{कृ}}$ + तिन्

(D) $\sqrt{\text{प्रकृ}}$ + क्तिन्

16. स एव वक्ता स च दर्शनीय:—रेखाङ्कित पदस्य व्युत्पत्ति:

(A) $\sqrt{\text{दर्श्}}$ + अनीयर्

(B) $\sqrt{\text{दृश}}$ + अनीयर्

(C) $\sqrt{\text{दृश}}$ + यत्

(D) $\sqrt{\text{दर्श}}$ + यत्

17. कुसुमस्तवकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विन:—रेखांकितपदस्य सन्धिच्छेद:

(A) कुसुमस्तवकस्य + एव

(B) कुसुमस्तवकस्य + ईव

(C) कुसुमस्तवकस्य + इव

(D) कुसुम: + नवकस्येव

18. सम्पत्सु महतां चित्तं भवत्युत्पलकोमलम् —रेखाङ्कित पदस्य सन्धिच्छेद:

(A) भवति + ऊत्पलकोमलम्

(B) भवति + उत्पलकोमलम्

(C) भवति + ओत्पलकोमलम्

(D) भवति + अत्पलकोमलम्

19. अधोऽधो गङ्गा इयं पदमुपगता स्तोकमथवा—सन्धियुक्त रूपम्-

(A) गङ्गायम्

(B) गाङ्गेयम्

(C) गङ्गेयम्

(D) गङ्गोयम्

20. वहति भुवनश्रेणीं शेष: अस्य वाक्यस्य वाच्यपरिवर्तनम्—

(A) शेषेण भुवनश्रेणी ऊह्यते

(B) शेषेण भुवनश्रेणीम् ऊह्यते

(C) शेष: भुवनश्रेणी ऊह्यते

(D) शेषेण भुवनश्रेणी वह्यते

21. हितोपदेशपठनेन को लाभः?
(A) नीतिविद्याज्ञानम्
(B) अर्थोपार्जनम्
(C) अवसरयापनम्
(D) बालकानन्दलाभः

22. पाटलिपुत्रनगरस्य नरपतिरासीत्
(A) विष्णुशर्मा
(B) सुदर्शनः
(C) लघुपतनकः
(D) चित्रग्रीवः

23. कार्याणि केन प्रकारेण सिध्यन्ति?
(A) मनोरथैः
(B) उद्यमेन
(C) दैवेन
(D) आलोचनया

24. धीमतां कालः कथं गच्छति?
(A) भोजनेन
(B) अर्थोपार्जनेन
(C) निद्रया
(D) काव्यशास्त्रविनोदेन

25. जालबद्धानां कपोतानां बन्धनं कः छिन्नवान्?
(A) लघुपतनकः
(B) चित्रग्रीवः
(C) हिरण्यकः
(D) व्याधः

26. विद्या ददाति विनयम्–इत्यस्य अन्वयः
(A) ददाति विद्या विनयम्
(B) विद्या विनयं ददाति
(C) ददाति विनयं विद्या
(D) विद्या ददाति विनयम्

27. उद्योगिनं पुरुषसिंहम् उपैति लक्ष्मीः—इत्यस्य अन्वयः
(A) उद्योगिनं पुरुषसिंहम् लक्ष्मीः उपैति
(B) उपैति उद्योगिनं पुरुषसिंहं लक्ष्मीः
(C) लक्ष्मीः उद्योगिनं पुरुषसिंहम् उपैति
(D) लक्ष्मीः उपैति उद्योगिनं पुरुषसिंहम्

28. पुरुषकारेण विना दैवं न सिध्यति— रेखाङ्कितपदे तृतीया
(A) अनुक्तकर्तरि
(B) करणे
(C) हेतौ
(D) विनायोगे

29. विनयाद् याति पात्रताम्—रेखाङ्कित पदे पञ्चमी
(A) हेतौ
(B) अपादाने
(C) अपेक्षार्थे
(D) करणे

30. कीटोऽपि सुमनःसङ्गाद् आरोहति सतां शिरः—अत्र षष्ठी
(A) सम्बन्धे
(B) कर्मणि
(C) कर्तरि
(D) अनादरे

31. भवतां <u>विनोदाय</u> काककूर्मादीनां विचित्रां कथां कथयामि— चतुर्थी किमर्थम्?

(A) सम्प्रदाने
(B) तादर्थ्ये
(C) कर्मणि
(D) अधिकरणे

32. <u>अजातमृतमूर्खाणां</u> वरमादौ न चान्तिमः—रेखाङ्कितपदे कः समासः?

(A) अव्ययीभावः
(B) द्वन्द्वसमासः
(C) तत्पुरुषसमासः
(D) बहुव्रीहिः

33. एतच्छ्रुत्वा इत्यस्य सन्धिविच्छेदः

(A) एतत् श्रुत्वा
(B) एत च्छ्रुत्वा
(C) एतच् श्रुत्वा
(D) एतः श्रुत्वा

34. 'निद्रा तन्द्रा मयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रिता' —इत्येते

(A) षड्रिपवः
(B) षड्गुणाः
(C) षड्विकाराः
(D) षड्दोषाः

35. व्याघ्रः ब्राह्मणाय किं दातुमैच्छत्?

(A) सुवर्णहारम्
(B) सुवर्णनुपूरम्
(C) सुवर्णकङ्कणम्
(D) सुवर्णाङ्गुरीयकम्

36. कस्मिन् अरण्ये व्याघ्रः वसति स्म?

(A) पूर्वारण्ये
(B) पश्चिमारण्ये
(C) उत्तरारण्ये
(D) दक्षिणारण्ये

37. 'अयं निजः परो वेति गणना ———।'

(A) उदारचरितानाम्
(B) सज्जनानाम्
(C) विद्वज्जनानाम्
(D) लघुचेतसाम्

38. 'निरस्तपादपे देशे——अपि द्रुमायते।'

(A) मण्डः
(B) भण्डः
(C) एरण्डः
(D) षण्डः

39. पाटलिपुत्रनगरं कुत्रासीत्?

(A) कावेरीतीरे
(B) यमुनातीरे
(C) गङ्गातीरे
(D) गोदावरीतीरे

40. आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः—

(A) देवः
(B) मूर्खः
(C) हितैषी
(D) पण्डितः

BA-II/ACSHP-204AECC-2/18

B.A. Semester-II (Programme) Examination, 2018

SANSKRIT

Subject Code : 20905 **Course Code : ACSHP/204/AECC-2**

Course Title : MIL

Full Marks: 40

TEST BOOKLET SERIES

B

The figures in the margin indicate full marks.
Candidates should answer all questions.
Each question carries one mark.

1. लभेत सिकतासु नैलम् अपि यन्नतः पीडयन्-श्लोकांशस्य अन्वयः

(A) यत्नतः पीडयन् सिकतासु तैलम् अपि लभेत।
(B) सिकतासु तैलम् अपि लभेत यन्नतः पीडयन्।
(C) लभेत यत्नतः पीडयन् सिकतासु तैलम् अपि।
(D) तैलम् अपि लभेत सिकतासु यत्नतः पीडयन्।

2. कस्य शास्त्रविहितम् औषधं नास्ति

(A) पीडितस्य
(B) उन्मत्तस्य
(C) मूर्खस्य
(D) दुर्बलस्य

3. दुग्धजलभेदविधौ प्रसिद्धः कः?

(A) सर्पः
(B) मार्जारः
(C) हंसः
(D) कुक्कुरः

4. साहित्यसङ्गीतकलाबिहीनः मनुष्य केन तुल्यः?

(A) विहगेन
(B) सर्पेण
(C) पशुना
(D) मत्स्येन

5. समाजे अपण्डितानां विभूषणं किम्?

(A) अर्थः
(B) पाण्डित्यम्
(C) मौनम्
(D) वाग्मिता

6. नमः शान्ताय तेजसे —रेखाङ्कितपदे चतुर्थी किमर्थम्?

(A) सम्प्रदान कारके चतुर्थी
(B) नमः शब्दयोगे चतुर्थी
(C) कर्मकारके चतुर्थी
(D) तादर्थ्ये चतुर्थी

7. भर्तृहरिमते कं न आराधयेत्?

(A) ईश्वरम्
(B) मातापितरौ
(C) सर्वज्ञम्
(D) मूर्खजनचित्तम्

8. सर्वाशापरिपूरके जलधरे वर्षति अपि प्रत्यहम्—रेखाङ्कित पदे सप्तमी—

(A) अधिकरणे सप्तमी
(B) भावे
(C) निमित्तार्थे
(D) अनादरे

9. प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचै:—रेखाङ्कितपदे क: समास:?
(A) अव्ययीभाव:
(B) बहुव्रीहि:
(C) तत्पुरुष:
(D) द्वन्द्व:

10. सुरपतिम् अपि श्वा पार्श्वस्थं विलोक्य न शङ्कते—रेखाङ्कित पदे समास:
(A) तृतीयातत्पुरुष:
(B) पञ्चमीतत्पुरुष:
(C) षष्ठीतत्पुरुष:
(D) सप्तमीतत्पुरुष:

11. त्रिभुवनम् उपकारश्रेणिभि: प्रीणयन्त:—रेखाङ्कितपदस्य विग्रह:
(A) त्रीणि भुवनानि
(B) त्रिभुवनम्
(C) त्रयाणां मुवनानां समाहार:
(D) त्रयो भुवना:

12. 'स्वायत्तमेकान्तगुणं विधात्रा विनिर्मितम्—रेखाङ्कित पदे तृतीया
(A) उक्तकर्तरि
(B) करणे
(C) अनुक्तकर्तरि
(D) हेतौ

13. बुधजनसकाशाद् अवगतम्—रेखाङ्कितपदस्य व्युत्पत्ति: का?
(A) अव-$\sqrt{गम्}$ + क्त
(B) अव-$\sqrt{गम्}$ + न
(C) अव-$\sqrt{गै}$ + क्त
(D) $\sqrt{अवगम्}$ + क्त

14. 'धिक् तां च तं च' रेखाङ्कितपदे द्वितीया कथम्?
(A) धिक्-शब्दयोगे
(B) कर्मणि
(C) च: शब्दयोगे
(D) कर्तरि

15. सम्पत्सु महतां चित्तं भवत्युत्पलकोमलम् —रेखाङ्कित पदस्य सन्धिच्छेद:
(A) भवति + ऊत्पलकोमलम्
(B) भवति + उत्पलकोमलम्
(C) भवति + ओत्पलकोमलम्
(D) भवति + अत्पलकोमलम्

16. अधोऽधो गङ्गा इयं पदमुपगता स्तोकमथवा—सन्धियुक्त रूपम्-
(A) गङ्गायम्
(B) गाङ्गेयम्
(C) गङ्गेयम्
(D) गङ्गोयम्

17. हितोपदेशपठनेन को लाभ:?
(A) नीतिविद्याज्ञानम्
(B) अर्थोपार्जनम्
(C) अवसरयापनम्
(D) बालकानन्दलाभ:

18. वहति भुवनश्रेर्णी शेष: अस्य वाक्यस्य वाच्यपरिवर्तनम्—
(A) शेषेण भुवनश्रेणी ऊह्यते
(B) शेषेण भुवनश्रेणीम् ऊह्यते
(C) शेष: भुवनश्रेणी ऊह्यते
(D) शेषेण भुवनश्रेणी वह्यते

19. स एव वक्ता स च दर्शनीय:—रेखाङ्कित पदस्य व्युत्पत्ति:
(A) $\sqrt{दर्श्}$ + अनीयर्
(B) $\sqrt{दृश}$ + अनीयर्
(C) $\sqrt{दृश}$ + यत्
(D) $\sqrt{दर्श}$ + यत्

20. कुसुमस्तवकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विन:—रेखांकितपदस्य सन्धिच्छेद:
(A) कुसुमस्तवकस्य + एव
(B) कुसुमस्तवकस्य + ईव
(C) कुसुमस्तवकस्य + इव
(D) कुसुम: + नवकस्येव

21. प्रकृति इयं सत्त्ववतां न खलु वयस्तेजसो हेतुः—रेखाङ्कित पदस्य का व्युत्पत्तिः?

(A) प्र$\sqrt{कृ}$ + ति

(B) प्र $\sqrt{कृ}$ + क्तिन्

(C) प्र$\sqrt{कृ}$ + तिन्

(D) $\sqrt{प्रकृ}$ + क्तिन्

22. विद्या ददाति विनयम्–इत्यस्य अन्वयः

(A) ददाति विद्या विनयम्

(B) विद्या विनयं ददाति

(C) ददाति विनयं विद्या

(D) विद्या ददाति विनयम्

23. धीमतां कालः कथं गच्छति?

(A) भोजनेन

(B) अर्थोपार्जनेन

(C) निद्रया

(D) काव्यशास्त्रविनोदेन

24. उद्योगिनं पुरुषसिंहम् उपैति लक्ष्मीः—इत्यस्य अन्वयः

(A) उद्योगिनं पुरुषसिंहम् लक्ष्मीः उपैति

(B) उपैति उद्योगिनं पुरुषसिंहं लक्ष्मीः

(C) लक्ष्मीः उद्योगिनं पुरुषसिंहम् उपैति

(D) लक्ष्मीः उपैति उद्योगिनं पुरुषसिंहम्

25. पाटलिपुत्रनगरस्य नरपतिरासीत्

(A) विष्णुशर्मा

(B) सुदर्शनः

(C) लघुपतनकः

(D) चित्रग्रीवः

26. पुरुषकारेण विना दैवं न सिध्यति— रेखाङ्कितपदे तृतीया

(A) अनुक्तकर्तरि

(B) करणे

(C) हेतौ

(D) विनायोगे

27. जालबद्धानां कपोतानां बन्धनं कः छिन्नवान्?

(A) लघुपतनकः

(B) चित्रग्रीवः

(C) हिरण्यकः

(D) व्याधः

28. कार्याणि केन प्रकारेण सिध्यन्ति?

(A) मनोरथैः

(B) उद्यमेन

(C) दैवेन

(D) आलोचनया

29. अजातमृतमूर्खाणां वरमादौ न चान्तिमः—रेखाङ्कितपदे कः समासः?

(A) अव्ययीभावः

(B) द्वन्द्वसमासः

(C) तत्पुरुषसमासः

(D) बहुव्रीहिः

30. 'निरस्तपादपे देशे——अपि द्रुमायते।'

(A) मण्डः

(B) भण्डः

(C) एरण्डः

(D) षण्डः

31. कस्मिन् अरण्ये व्याघ्रः वसति स्म?

(A) पूर्वारण्ये

(B) पश्चिमारण्ये

(C) उत्तरारण्ये

(D) दक्षिणारण्ये

32. 'अयं निजः परो वेति गणना ———।'

(A) उदारचरितानाम्

(B) सज्जनानाम्

(C) विद्वज्जनानाम्

(D) लघुचेतसाम्

33. पाटलिपुत्रनगरं कुत्रासीत्?
(A) कावेरीतीरे
(B) यमुनातीरे
(C) गङ्गातीरे
(D) गोदावरीतीरे

34. आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः—
(A) देवः
(B) मूर्खः
(C) हितैषी
(D) पण्डितः

35. एतच्छ्रुत्वा इत्यस्य सन्धिविच्छेदः
(A) एतत् श्रुत्वा
(B) एत च्छ्रुत्वा
(C) एतच् श्रुत्वा
(D) एतः श्रुत्वा

36. <u>विनयाद्</u> याति पात्रताम्—रेखाङ्कित पदे पञ्चमी
(A) हेतौ
(B) अपादाने
(C) अपेक्षार्थे
(D) करणे

37. व्याघ्रः ब्राह्मणाय किं दातुमैच्छत्?
(A) सुवर्णहारम्
(B) सुवर्णनुपूरम्
(C) सुवर्णकङ्कणम्
(D) सुवर्णाङ्गुरीयकम्

38. 'निद्रा तन्द्रा मयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रिता' —इत्येते
(A) षड्रिपवः
(B) षड्गुणाः
(C) षड्विकाराः
(D) षड्दोषाः

39. कीटोऽपि सुमनःसङ्गाद् आरोहति <u>सतां</u> शिरः—अत्र षष्ठी
(A) सम्बन्धे
(B) कर्मणि
(C) कर्तरि
(D) अनादरे

40. भवतां <u>विनोदाय</u> काककूर्मादीनां विचित्रां कथां कथयामि—चतुर्थी किमर्थम्?
(A) सम्प्रदाने
(B) तादर्थ्ये
(C) कर्मणि
(D) अधिकरणे

BA-II/ACSHP-204AECC-2/18

B.A. Semester-II (Programme) Examination, 2018

SANSKRIT

Subject Code : 20905 **Course Code : ACSHP/204/AECC-2**

Course Title : MIL

Full Marks: 40

TEST BOOKLET SERIES

D

The figures in the margin indicate full marks.
Candidates should answer all questions.
Each question carries one mark.

1. आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः—
(A) देवः
(B) मूर्खः
(C) हितैषी
(D) पण्डितः

2. पाटलिपुत्रनगरं कुत्रासीत्?
(A) कावेरीतीरे
(B) यमुनातीरे
(C) गङ्गातीरे
(D) गोदावरीतीरे

3. 'निरस्तपादपे देशे——अपि द्रुमायते।'
(A) मण्डः
(B) भण्डः
(C) एरण्डः
(D) षण्डः

4. 'अयं निजः परो वेति गणना ———।'
(A) उदारचरितानाम्
(B) सज्जनानाम्
(C) विद्वज्जनानाम्
(D) लघुचेतसाम्

5. कस्मिन् अरण्ये व्याघ्रः वसति स्म?
(A) पूर्वारण्ये
(B) पश्चिमारण्ये
(C) उत्तरारण्ये
(D) दक्षिणारण्ये

6. व्याघ्रः ब्राह्मणाय किं दातुमैच्छत्?
(A) सुवर्णहारम्
(B) सुवर्णनुपूरम्
(C) सुवर्णकङ्कणम्
(D) सुवर्णाङ्गुरीयकम्

7. 'निद्रा तन्द्रा मयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रिता' —इत्येते
(A) षड्रिपवः
(B) षड्गुणाः
(C) षड्विकाराः
(D) षड्दोषाः

8. एतच्छ्रुत्वा इत्यस्य सन्धिविच्छेदः
(A) एतत् श्रुत्वा
(B) एत च्छ्रुत्वा
(C) एतच् श्रुत्वा
(D) एतः श्रुत्वा

9. अजातमृतमूर्खाणां वरमादौ न चान्तिमः—रेखाङ्कितपदे कः समासः?

(A) अव्ययीभावः
(B) द्वन्द्वसमासः
(C) तत्पुरुषसमासः
(D) बहुव्रीहिः

10. भवतां विनोदाय काककूर्मादीनां विचित्रां कथां कथयामि—चतुर्थी किमर्थम्?

(A) सम्प्रदाने
(B) तादर्थ्ये
(C) कर्मणि
(D) अधिकरणे

11. कीटोऽपि सुमनःसङ्गाद् आरोहति सतां शिरः—अत्र षष्ठी

(A) सम्बन्धे
(B) कर्मणि
(C) कर्तरि
(D) अनादरे

12. विनयाद् याति पात्रताम्—रेखाङ्कित पदे पञ्चमी

(A) हेतौ
(B) अपादाने
(C) अपेक्षार्थे
(D) करणे

13. पुरुषकारेण विना दैवं न सिध्यति— रेखाङ्कितपदे तृतीया

(A) अनुक्तकर्तरि
(B) करणे
(C) हेतौ
(D) विनायोगे

14. उद्योगिनं पुरुषसिंहम् उपैति लक्ष्मीः—इत्यस्य अन्वयः

(A) उद्योगिनं पुरुषसिंहम् लक्ष्मीः उपैति
(B) उपैति उद्योगिनं पुरुषसिंहं लक्ष्मीः
(C) लक्ष्मीः उद्योगिनं पुरुषसिंहम् उपैति
(D) लक्ष्मीः उपैति उद्योगिनं पुरुषसिंहम्

15. विद्या ददाति विनयम्–इत्यस्य अन्वयः

(A) ददाति विद्या विनयम्
(B) विद्या विनयं ददाति
(C) ददाति विनयं विद्या
(D) विद्या ददाति विनयम्

16. जालबद्धानां कपोतानां बन्धनं कः छिन्नवान्?

(A) लघुपतनकः
(B) चित्रग्रीवः
(C) हिरण्यकः
(D) व्याधः

17. धीमतां कालः कथं गच्छति?

(A) भोजनेन
(B) अर्थोपार्जनेन
(C) निद्रया
(D) काव्यशास्त्रविनोदेन

18. कार्याणि केन प्रकारेण सिध्यन्ति?

(A) मनोरथैः
(B) उद्यमेन
(C) दैवेन
(D) आलोचनया

19. पाटलिपुत्रनगरस्य नरपतिरासीत्

(A) विष्णुशर्मा
(B) सुदर्शनः
(C) लघुपतनकः
(D) चित्रग्रीवः

20. वहति भुवनश्रेणीं शेषः अस्य वाक्यस्य वाच्यपरिवर्तनम्—

(A) शेषेण भुवनश्रेणी ऊह्यते
(B) शेषेण भुवनश्रेणीम् ऊह्यते
(C) शेषः भुवनश्रेणी ऊह्यते
(D) शेषेण भुवनश्रेणी वह्यते

21. हितोपदेशपठनेन को लाभः?
(A) नीतिविद्याज्ञानम्
(B) अर्थोपार्जनम्
(C) अवसरयापनम्
(D) बालकानन्दलाभः

22. अधोऽधो गङ्गा इयं पदमुपगता स्तोकमथवा—सन्धियुक्त रूपम्-
(A) गङ्गायम्
(B) गाङ्गेयम्
(C) गङ्गेयम्
(D) गङ्गोयम्

23. सम्पत्सु महतां चित्तं भवत्युत्पलकोमलम् —रेखाङ्कित पदस्य सन्धिच्छेदः
(A) भवति + ऊत्पलकोमलम्
(B) भवति + उत्पलकोमलम्
(C) भवति + ओत्पलकोमलम्
(D) भवति + अत्पलकोमलम्

24. कुसुमस्तवकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विनः—रेखांकितपदस्य सन्धिच्छेदः
(A) कुसुमस्तवकस्य + एव
(B) कुसुमस्तवकस्य + ईव
(C) कुसुमस्तवकस्य + इव
(D) कुसुमः + नवकस्येव

25. स एव वक्ता स च दर्शनीयः—रेखाङ्कित पदस्य व्युत्पत्तिः
(A) √दर्श् + अनीयर्
(B) √दृश + अनीयर्
(C) √दृश + यत्
(D) √दर्श + यत्

26. प्रकृति इयं सत्त्ववतां न खलु वयस्तेजसो हेतुः—रेखाङ्कित पदस्य का व्युत्पत्तिः?
(A) प्र√कृ + ति
(B) प्र √कृ + क्तिन्
(C) प्र√कृ + तिन्
(D) √प्रकृ + क्तिन्

27. बुधजनसकाशाद् अवगतम्—रेखाङ्कितपदस्य व्युत्पत्तिः का?
(A) अव-√गम् + क्त
(B) अव-√गम् + न
(C) अव-√गै + क्त
(D) √अवगम् + क्त

28. सुरपतिम् अपि श्वा पार्श्वस्थं विलोक्य न शङ्कते—रेखाङ्कित पदे समासः
(A) तृतीयातत्पुरुषः
(B) पञ्चमीतत्पुरुषः
(C) षष्ठीतत्पुरुषः
(D) सप्तमीतत्पुरुषः

29. त्रिभुवनम् उपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः—रेखाङ्कितपदस्य विग्रहः
(A) त्रीणि भुवनानि
(B) त्रिभुवनम्
(C) त्रयाणां मुवनानां समाहारः
(D) त्रयो भुवनाः

30. सर्वाशापरिपूरके जलधरे वर्षति अपि प्रत्यहम्—रेखाङ्कित पदे सप्तमी—
(A) अधिकरणे सप्तमी
(B) भावे
(C) निमित्तार्थे
(D) अनादरे

31. प्रारभ्यते न खलु <u>विघ्नभयेन</u> नीचै:—रेखाङ्कितपदे क: समास:?
(A) अव्ययीभाव:
(B) बहुव्रीहि:
(C) तत्पुरुष:
(D) द्वन्द्व:

32. 'स्वायत्तमेकान्तगुणं <u>विधात्रा</u> विनिर्मितम्—रेखाङ्कित पदे तृतीया
(A) उक्तकर्तरि
(B) करणे
(C) अनुक्तकर्तरि
(D) हेतौ

33. 'धिक् <u>तां</u> च तं च' रेखाङ्कितपदे द्वितीया कथम्?
(A) धिक्-शब्दयोगे
(B) कर्मणि
(C) च: शब्दयोगे
(D) कर्तरि

34. नम: शान्ताय <u>तेजसे</u> —रेखाङ्कितपदे चतुर्थी किमर्थम्?
(A) सम्प्रदान कारके चतुर्थी
(B) नम: शब्दयोगे चतुर्थी
(C) कर्मकारके चतुर्थी
(D) तादर्थ्ये चतुर्थी

35. लभेत सिकतासु नैलम् अपि यत्नत: पीडयन्-श्लोकांशस्य अन्वय:
(A) यत्नत: पीडयन् सिकतासु तैलम् अपि लभेत।
(B) सिकतासु तैलम् अपि लभेत यत्नत: पीडयन्।
(C) लभेत यत्नत: पीडयन् सिकतासु तैलम् अपि।
(D) तैलम् अपि लभेत सिकतासु यत्नत: पीडयन्।

36. कस्य शास्त्रविहितम् औषधं नास्ति
(A) पीडितस्य
(B) उन्मत्तस्य
(C) मूर्खस्य
(D) दुर्बलस्य

37. दुग्धजलभेदविधौ प्रसिद्ध: क:?
(A) सर्प:
(B) मार्जार:
(C) हंस:
(D) कुक्कुर:

38. साहित्यसङ्गीतकलाबिहीन: मनुष्य केन तुल्य:?
(A) विहगेन
(B) सर्पेण
(C) पशुना
(D) मत्स्येन

39. समाजे अपण्डितानां विभूषणं किम्?
(A) अर्थ:
(B) पाण्डित्यम्
(C) मौनम्
(D) वाग्मिता

40. भर्तृहरिमते कं न आराधयेत्?
(A) ईश्वरम्
(B) मातापितरौ
(C) सर्वज्ञम्
(D) मूर्खजनचित्तम्

BA-II/ACSHP-204AECC-2/18

B.A. Semester-II (Programme) Examination, 2018

SANSKRIT

Subject Code : 20905 **Course Code : ACSHP/204/AECC-2**

Course Title : MIL

Full Marks: 40

TEST BOOKLET SERIES

C

The figures in the margin indicate full marks.
Candidates should answer all questions.
Each question carries one mark.

1. उद्योगिनं पुरुषसिंहम् उपैति लक्ष्मी:—इत्यस्य अन्वय:
(A) उद्योगिनं पुरुषसिंहम् लक्ष्मी: उपैति
(B) उपैति उद्योगिनं पुरुषसिंहं लक्ष्मी:
(C) लक्ष्मी: उद्योगिनं पुरुषसिंहम् उपैति
(D) लक्ष्मी: उपैति उद्योगिनं पुरुषसिंहम्

2. 'धिक् तां च तं च' रेखाङ्कितपदे द्वितीया कथम्?
(A) धिक्-शब्दयोगे
(B) कर्मणि
(C) च: शब्दयोगे
(D) कर्तरि

3. विद्या ददाति विनयम्–इत्यस्य अन्वय:
(A) ददाति विद्या विनयम्
(B) विद्या विनयं ददाति
(C) ददाति विनयं विद्या
(D) विद्या ददाति विनयम्

4. जालबद्धानां कपोतानां बन्धनं क: छिन्नवान्?
(A) लघुपतनक:
(B) चित्रग्रीव:
(C) हिरण्यक:
(D) व्याध:

5. पुरुषकारेण विना दैवं न सिध्यति— रेखाङ्कितपदे तृतीया
(A) अनुक्तकर्तरि
(B) करणे
(C) हेतौ
(D) विनायोगे

6. 'स्वायत्तमेकान्तगुणं विधात्रा विनिर्मितम्—रेखाङ्कित पदे तृतीया
(A) उक्तकर्तरि
(B) करणे
(C) अनुक्तकर्तरि
(D) हेतौ

7. दुग्धजलभेदविधौ प्रसिद्ध: क:?
(A) सर्प:
(B) मार्जार:
(C) हंस:
(D) कुक्कुर:

8. धीमतां काल: कथं गच्छति?
(A) भोजनेन
(B) अर्थोपार्जनेन
(C) निद्रया
(D) काव्यशास्त्रविनोदेन

9. सर्वाशापरिपूरके जलधरे वर्षति अपि प्रत्यहम्—रेखाङ्कित पदे सप्तमी—

(A) अधिकरणे सप्तमी
(B) भावे
(C) निमित्तार्थे
(D) अनादरे

10. कार्याणि केन प्रकारेण सिध्यन्ति?

(A) मनोरथैः
(B) उद्यमेन
(C) दैवेन
(D) आलोचनया

11. लभेत सिकतासु नैलम् अपि यत्नतः पीडयन्-श्लोकांशस्य अन्वयः

(A) यत्नतः पीडयन् सिकतासु तैलम् अपि लभेत।
(B) सिकतासु तैलम् अपि लभेत यत्नतः पीडयन्।
(C) लभेत यत्नतः पीडयन् सिकतासु तैलम् अपि।
(D) तैलम् अपि लभेत सिकतासु यत्नतः पीडयन्।

12. पाटलिपुत्रनगरस्य नरपतिरासीत्

(A) विष्णुशर्मा
(B) सुदर्शनः
(C) लघुपतनकः
(D) चित्रग्रीवः

13. नमः शान्ताय तेजसे —रेखाङ्कितपदे चतुर्थी किमर्थम्?

(A) सम्प्रदान कारके चतुर्थी
(B) नमः शब्दयोगे चतुर्थी
(C) कर्मकारके चतुर्थी
(D) तादर्थ्ये चतुर्थी

14. समाजे अपण्डितानां विभूषणं किम्?

(A) अर्थः
(B) पाण्डित्यम्
(C) मौनम्
(D) वाग्मिता

15. हितोपदेशपठनेन को लाभः?

(A) नीतिविद्याज्ञानम्
(B) अर्थोपार्जनम्
(C) अवसरयापनम्
(D) बालकानन्दलाभः

16. वहति भुवनश्रेणीं शेषः अस्य वाक्यस्य वाच्यपरिवर्तनम्—

(A) शेषेण भुवनश्रेणी ऊह्यते
(B) शेषेण भुवनश्रेणीम् ऊह्यते
(C) शेषः भुवनश्रेणी ऊह्यते
(D) शेषेण भुवनश्रेणी वह्यते

17. अधोऽधो गङ्गा इयं पदमुपगता स्तोकमथवा—सन्धियुक्त रूपम्-

(A) गङ्गायम्
(B) गाङ्गेयम्
(C) गङ्गेयम्
(D) गङ्गोयम्

18. सम्पत्सु महतां चित्तं भवत्युत्पलकोमलम् —रेखाङ्कित पदस्य सन्धिच्छेदः

(A) भवति + ऊत्पलकोमलम्
(B) भवति + उत्पलकोमलम्
(C) भवति + ओत्पलकोमलम्
(D) भवति + अत्पलकोमलम्

19. प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः—रेखाङ्कितपदे कः समासः?

(A) अव्ययीभावः
(B) बहुव्रीहिः
(C) तत्पुरुषः
(D) द्वन्द्वः

20. त्रिभुवनम् उपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः—रेखाङ्कितपदस्य विग्रहः

(A) त्रीणि भुवनानि
(B) त्रिभुवनम्
(C) त्रयाणां मुवनानां समाहारः
(D) त्रयो भुवनाः

21. साहित्यसङ्गीतकलाबिहीनः मनुष्य केन तुल्यः?

(A) विहगेन

(B) सर्पेण

(C) पशुना

(D) मत्स्येन

22. कुसुमस्तवकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विनः—रेखांकितपदस्य सन्धिच्छेदः

(A) कुसुमस्तवकस्य + एव

(B) कुसुमस्तवकस्य + ईव

(C) कुसुमस्तवकस्य + इव

(D) कुसुमः + नवकस्येव

23. कस्य शास्त्रविहितम् औषधं नास्ति

(A) पीडितस्य

(B) उन्मत्तस्य

(C) मूर्खस्य

(D) दुर्बलस्य

24. स एव वक्ता स च दर्शनीयः—रेखाङ्कित पदस्य व्युत्पत्तिः

(A) $\sqrt{\text{दर्श्}}$ + अनीयर्

(B) $\sqrt{\text{दृश}}$ + अनीयर्

(C) $\sqrt{\text{दृश}}$ + यत्

(D) $\sqrt{\text{दर्श}}$ + यत्

25. प्रकृति इयं सत्त्ववतां न खलु वयस्तेजसो हेतुः—रेखाङ्कित पदस्य का व्युत्पत्तिः?

(A) प्र$\sqrt{\text{कृ}}$ + ति

(B) प्र $\sqrt{\text{कृ}}$ + क्तिन्

(C) प्र$\sqrt{\text{कृ}}$ + तिन्

(D) $\sqrt{\text{प्रकृ}}$ + क्तिन्

26. बुधजनसकाशाद् अवगतम्—रेखाङ्कितपदस्य व्युत्पत्तिः का?

(A) अव-$\sqrt{\text{गम्}}$ + क्त

(B) अव-$\sqrt{\text{गम्}}$ + न

(C) अव-$\sqrt{\text{गै}}$ + क्त

(D) $\sqrt{\text{अवगम्}}$ + क्त

27. सुरपतिम् अपि श्वा पार्श्वस्थं विलोक्य न शङ्कते—रेखाङ्कित पदे समासः

(A) तृतीयातत्पुरुषः

(B) पञ्चमीतत्पुरुषः

(C) षष्ठीतत्पुरुषः

(D) सप्तमीतत्पुरुषः

28. भर्तृहरिमते कं न आराधयेत्?

(A) ईश्वरम्

(B) मातापितरौ

(C) सर्वज्ञम्

(D) मूर्खजनचित्तम्

29. आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः—

(A) देवः

(B) मूर्खः

(C) हितैषी

(D) पण्डितः

30. पाटलिपुत्रनगरं कुत्रासीत्?

(A) कावेरीतीरे

(B) यमुनातीरे

(C) गङ्गातीरे

(D) गोदावरीतीरे

31. कीटोऽपि सुमनःसङ्गाद् आरोहति <u>सतां</u> शिरः—अत्र षष्ठी
(A) सम्बन्धे
(B) कर्मणि
(C) कर्तरि
(D) अनादरे

32. कस्मिन् अरण्ये व्याघ्रः वसति स्म?
(A) पूर्वारण्ये
(B) पश्चिमारण्ये
(C) उत्तरारण्ये
(D) दक्षिणारण्ये

33. 'अयं निजः परो वेति गणना ———।'
(A) उदारचरितानाम्
(B) सज्जनानाम्
(C) विद्वज्जनानाम्
(D) लघुचेतसाम्

34. 'निरस्तपादपे देशे——अपि द्रुमायते।'
(A) मण्डः
(B) भण्डः
(C) एरण्डः
(D) षण्डः

35. व्याघ्रः ब्राह्मणाय किं दातुमैच्छत्?
(A) सुवर्णहारम्
(B) सुवर्णनुपूरम्
(C) सुवर्णकङ्कणम्
(D) सुवर्णाङ्गुरीयकम्

36. 'निद्रा तन्द्रा मयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रिता' —इत्येते
(A) षड्रिपवः
(B) षड्गुणाः
(C) षड्विकाराः
(D) षड्दोषाः

37. <u>अजातमृतमूर्खाणां</u> वरमादौ न चान्तिमः—रेखाङ्कितपदे कः समासः?
(A) अव्ययीभावः
(B) द्वन्द्वसमासः
(C) तत्पुरुषसमासः
(D) बहुव्रीहिः

38. एतच्छ्रुत्वा इत्यस्य सन्धिविच्छेदः
(A) एतत् श्रुत्वा
(B) एत च्छ्रुत्वा
(C) एतच् श्रुत्वा
(D) एतः श्रुत्वा

39. भवतां <u>विनोदाय</u> काककूर्मादीनां विचित्रां कथां कथयामि—चतुर्थी किमर्थम्?
(A) सम्प्रदाने
(B) तादर्थ्ये
(C) कर्मणि
(D) अधिकरणे

40. <u>विनयाद्</u> याति पात्रताम्—रेखाङ्कित पदे पञ्चमी
(A) हेतौ
(B) अपादाने
(C) अपेक्षार्थे
(D) करणे

B.A.-II/AHSNS-201C-3/18

B.A. Semester-II (Honours) Examination, 2018

SANSKRIT

Subject Code : 20901 **Course Code : AHSNS/201C-3**

Course Title : Poetics and Literary Criticism

Time: 2 Hours **Full Marks: 40**

The figures in the margin indicate full marks.
Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.

Group-A

1. कश्चन *एकः* प्रश्नः समाधेयः। 10×1=10

(क) दृश्यकाव्यस्य रूपकनामकरणे कः हेतुः? रूपकोपरूकयोः कति भेदाः? नाटकस्य वैशिष्ट्यमालोचयत।

(ख) को नाम सन्धिः? सन्धिभेदा नामत उल्लिख्यन्ताम्। सन्धिविषये सोदाहरणं लघुनिबन्धः रचनीयः।

(ग) प्रस्तावनायाः लक्षणं भेदांश्च सोदाहरणं लिखत।

2. संक्षेपेण कस्याप्येकस्य उत्तरं प्रदेयम्। 5×1=5

(क) साहित्यदर्पणमतुसृन्य नान्दीलक्षणं सोदाहरणं लिखत।

(ख) अर्थप्रकृतेः लक्षणं विभागांश्च लिखत।

Group-B

3. देवनागरीलिपिमाश्रित्य संस्कृतभाषया कस्याप्येकस्य अलङ्कारस्य सोदाहरणं लक्षणं लिख्यताम्। 5×1=5

यमकम्, उपमा

4. देवनागरीलिपिमाश्रित्य संस्कृतभाषया कस्याप्येकस्य अलङ्कारं निरूपयत। 1×5=5

(क) नेदं नभोमण्डलमम्बुराशिर्नैताश्च तारा नवफेनभङ्गाः।
नायं शशी कुण्डलितो फणीन्द्रो नासौ कलङ्कः शयितो मुरारिः।।

(ख) त्वदङ्गमार्दवं द्रष्टुः कस्य चित्तेन भासते।
मालती-शशभृल्लेखा-कदलीनां कठोरता।।

5. देवनागरीलिपिमाश्रित्य संस्कृतभाषया कस्याप्येकस्य अलङ्कारयोर्मध्ये पार्थक्यं प्रदर्शयत। 1×5=5

(क) वृत्यनुप्रास-श्रुत्यनुप्रासयोः

(ख) दृष्टान्त-निदर्शनयोः

Group-C

6. केषाञ्चन *पञ्चानामुत्तराणि* लिखत। *द्वयोरुत्तरमवश्यं* संस्कृतभाषया देवनागरीलिपिमाश्रित्य प्रदेयम्। 2×5=10

(क) नाट्यशास्त्रं केन विरचितम्? तस्मिन् कति अध्यायाः सन्ति?

(ख) 'रीतिरात्माकाव्यस्य' इति केन उक्तम्? तस्य ग्रन्थस्य नाम किम?

(ग) 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' इति कस्मिन् ग्रन्थे विद्यते? तस्य ग्रन्थस्य रचयितुः नाम किम्?

(घ) रसः कति विधः? तेषां नामानि लिखत।

(ङ) अलङ्कारशास्त्रे के के सम्प्रदायाः प्रसिद्धाः सन्ति?

(च) काव्यप्रकाशकर्तुः आचार्यमम्मटस्य मते काव्यस्य किं लक्षणम्?

(छ) 'विभावानुभावव्यभिचारि संयोगात् रसनिष्पत्तिः' इति सूत्रस्य अर्थं प्रकाशयत।

———————

AH-II/AHSNS/202C-4/18

B.A. Semester-II (Honours) Examination, 2018

SANSKRIT

Subject Code : 20902 **Course Code : AHSNS/202C-4**

Course Title : Classical Sanskrit Literature (Drama)

Time: 2 Hours **Full Marks: 40**

The figures in the margin indicate full marks.
Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.

Group-A

1. निम्नोक्तप्रश्नेषु यस्य *कस्यचिद् एकस्य* प्रश्नस्योत्तरं दीयताम् : 10×1=10

(क) दुर्वाससः अभिशापवृत्तस्य नाटकीयं तात्पर्यम् आलोच्यताम्।

(ख) अभिज्ञानशकुन्तले कस्तावद् अङ्कःश्रेष्ठ इति सयुक्ति विचार्यताम्।

(ग) स्वप्नवासवदत्तमिति रूपकस्य नामकरणस्य याथार्थ्यम् आलोच्यताम्।

2. ययोः श्लोकयोः *एकस्य* संस्कृतभाषया देवनागरलिप्या व्याख्या सप्रसङ्गं कार्य्या : 5×1=5

(क) इदं किलाव्याजमनोहरं वपुस्तपःक्षमं साधयितुं य इच्छति।
ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया शमीलतां छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति।।

(ख) अर्थो हि कन्या परकीय एव तामघ संप्रेष्य परिग्रहीतुः।।
जातो समयं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।।

3. ययोः कयोश्चिद् *एकस्य* श्लोकस्य सप्रसङ्गं संस्कृतभाषया देवनागरलिप्या व्याख्या कार्य्या : 5×1=5

(क) प्रद्वेषो बहुमानो ना सङ्कल्पादुपजायते।
भर्तृदाराभिलाषित्वादस्यां मे महतो स्वता।।

(ख) गुणानां वा विशालानां सत्काराणां च नित्यशः।
कर्तारः सुलभाः लोके विज्ञातारस्तु दुर्लभाः।।

4. भावसम्प्रसारणं कर्तव्यम् : 5×1=5

(क) किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।

(ख) चक्रारपङ्क्तिरिव गच्छति भाग्यपङ्क्तिः।

5. यथेच्छं *पञ्च*प्रश्नानाम् उत्तरं संस्कृतभाषया देवनागरलिप्या च लेख्यम् : 5×1=5

(क) *व्यवस्यति* (2. क) इत्यस्य व्युत्पत्ति (प्रकृति-प्रत्यय)–निर्णयः कर्तव्यः।

(ख) *परिग्रहीतुः* (2. ख) इत्यस्य व्युत्पत्ति (प्रकृति-प्रत्यय)–निर्णयः कर्तव्यः।

(ग) *प्रत्यर्पितन्यासः* (2. ख) इत्यस्य सविग्रहसमासनाम लेख्यम्।

(घ) *तपःक्षमम्* (2. क) इत्यस्य सविग्रहसमासनाम लेख्यम्।

(ङ) *सङ्कल्पात्* (3. क) इत्यस्य सूत्रोल्लेखपूर्वकं सकारणविभक्ति–निर्णयः कर्तव्यः।

(च) *स्वता* (3. क) इत्यस्य सूत्रोल्लेखपूर्वकं सकारणविभक्ति–निर्णयः कर्तव्यः।

(छ) 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' (2. ख) इत्यत्र सन्धिविच्छेदः कर्तव्यः।

6. पञ्च लघुप्रश्नाः समाधेयाः 2×5=10

(क) शकुन्तलायाः पालकपिता कः? जन्मदाता वा कः?

(ख) प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः— कः प्रपन्नः? कानि च तस्य अष्टौ शरीराणि?

(ग) स्वप्नवासवदत्तनाटकस्य मङ्गलश्लोके केषां नाटकीय चरितानाम् इङ्गितमस्ति?

(घ) कृष्णसारे ददच्चक्षुस्तयि चाधिज्यकार्मुके। मृगानुसारिणं साक्षात् पश्यामीव पिनाकिनम्– इत्यस्य सलक्षणम् अलङ्कारनिरूपणं कार्यम्।

(ङ) ''पद्मावती नरपतेर्महिषी भवित्री
दृष्टा विपत्तिरथ यैः प्रथमं प्रदिष्टा।
तत्प्रत्ययात् कृतमिदं न हि सिद्धवाक्या
न्युत्क्रम्य गच्छति विधिः सुपरीक्षितानि।।''
– इत्यस्य सलक्षणम् अलङ्कारनिरूपणं कार्यम्।

(च) 'भोदु भोदु अन्तणी आ दाणिं संवुत्ता'— इत्यस्य संस्कृतं रूपं लेख्यम्।

(छ) ईषदीषच्चुम्बितानि भ्रमरैः सुकुमारकेसरशिखानि– इत्यस्य प्राकृतं रूपं लेख्यम्।

———————